बिजली सुधारने वाले

राजेश जोशी

अक्सर झड़ी के दिनों में
जब सन्नाट पड़ती है बौछार
और अन्धड़ चलते हैं
आपस में गुत्थम-गुत्था हो जाते हैं
कई तार
या
बिजली के खम्बे पर
कोई नंगा तार
पानी में भीगता
चिंगारियों में चटकता है।
एक फूल आग का
बड़े तारे-सा
झरता है।
अचानक
उमड़ आई
अँधेरे की नदी में।

मोहल्ले के मोहल्ले
घुप्प अँधेरे में
डूब जाते हैं

वे आते हैं
बिजली सुधारने वाले।

पानी से तर-बतर टोप लगाए
पुरानी बरसातियों की दरारों
और कॉलर से रिसता पानी
अन्दर तक
भिगो चुका
होता है उन्हें।
भीगते भागते
वे आते हैं
अँधेरे की दीवार को
अपनी छोटी-सी टॉर्च से
छेदते हुए।

चित्रः प्रिया कुरियन

वे आते हैं
खम्बे पर टिकाते हैं
अपनी नसेनी को लम्बा करते हुए
और चीनी मिट्टी के कानों को उमेठते
एक-एक करके खींचते हैं
देखते हैं
परखते हैं
फिर कस देते हैं किसी में
एक पतला-सा तार।

एक बार फिर
जग-मग हो जाती है
हर घर की आँख।

वे अपनी नसेनी उतारकर
बढ़ जाते हैं
अगले मोहल्ले की तरफ
अगले अँधेरे की ओर

अपनी सूची में दर्ज
शिकायतों पर
निशान लगाते हुए।

वे आते हैं
हाथों में
रबर के दस्ताने चढ़ाए
साइकल पर लटकाए
एल्युमीनियम की फोल्डिंग नसेनी
लकड़ी की लम्बी छड़
और एक पुराने झोले में
तार, पेंचकस, टेस्टर
और जाने क्या-क्या
भरे हुए।